Look n Learn
Children's Jain Magazine
25th June 2016 I Every Fortnight I English, Hindi & Gujarati
Rs. 5.00/-

मांगलिक अर्थात् मंगलकारी!

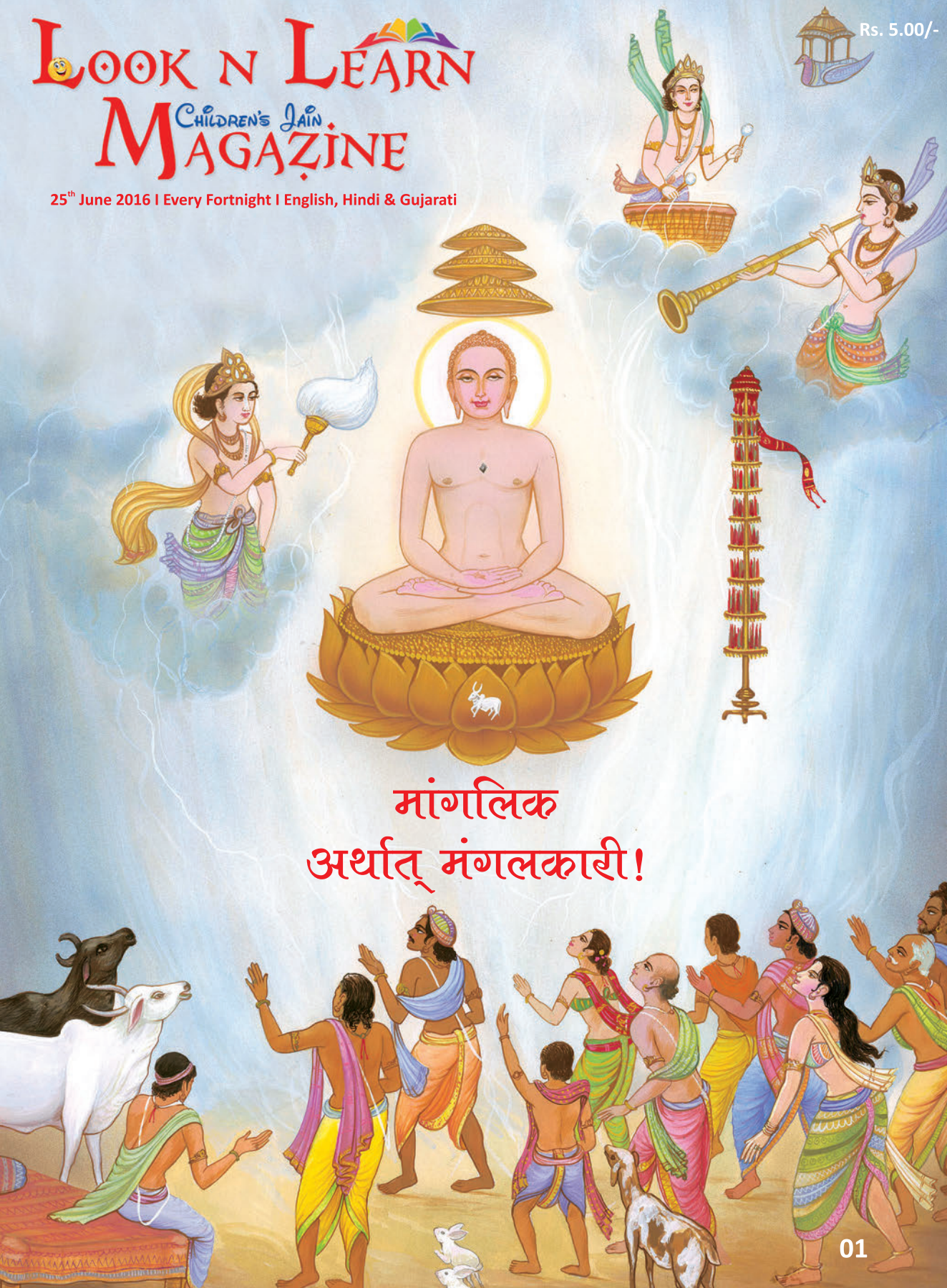

Year - 9, Vol: 7, Issue: 10, Date: 25.06.2016
Editor: Ashokbhai Sheth 20, Vanik Niwas, 1st floor, Cama Lane, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

मांगलिक!

गुरु या परमात्मा का शरण ग्रहण करना है मांगलिक...

मां	मेरे में रहे हुए अहम् को शून्य करे।
ग	गुणीजन आत्मा के पास सामान्य होने की प्रोसेस।
लि	लीन होना, मन से पवित्र और शांत होना।
क	कल्याणकारी।

अनंत पुण्य का उदय हो, तो ही गुरुदेव, साधु-साध्वी के मुख से मांगलिक सुनने मिलता है।

लाखो मनुष्य, प्राणियों, नारकी के जीव, कीड़ी-मकोडों को नहीं सुनने मिलता।

Cheque or Draft:
Arham Yuva Group

Parasdham
Vallabh Baug Lane, Tilak Road,
Ghatkopar (E), Mumbai - 77

Subscription for 10 years:
India : Rs. 1000/-
Abroad : Rs. 5000/-

मांगलिक अर्थात्... मंगलकारी कौन है?

स्वंय आत्म का कल्याण करनेवाले और दुसरों को भी आत्म कल्याण का मार्ग दिखाने वाले अरिहंत भगवान, सिध्ध भगवान, साधु-साध्वीजी और केवली भगवंत ने बताया हुआ धर्म मंगल है।

अरिहंत

सिध्ध

साधु

धर्म

STORY HOUR

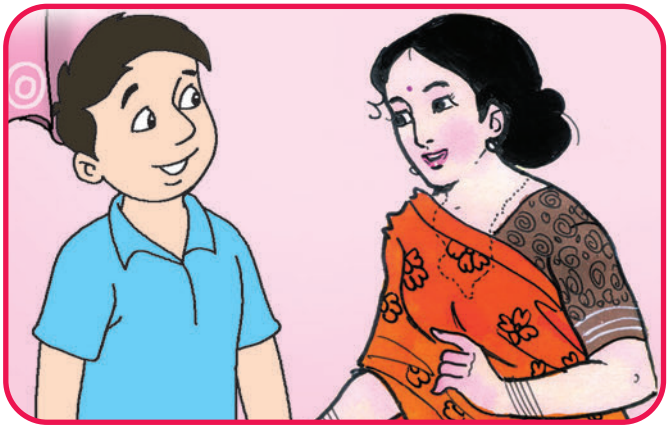

नवा वर्ष नी शुरुआत थइ रही हती। घरना बधाज लोको सवारे ५ वागे उठी अने नाही घोइने स्वच्छ कपडा पहेरीने तैयार थइ गया। बधा पूज्य संत सतीजी पासे जवानी तैयारी करी रह्या हता।

राज - मम्मी! आपणे आजे व्हेला उठीने क्यां जवानु छे?

मम्मी - बेटा! आपणे मांगलिक सांभळवा जवानुं छे।

राज - ओटले? मांगलिक ओ शुं छे।

मम्मी - आजे नवा वर्ष नो पहेलो दिवस छे। बधा पूज्य गुरुदेव ना मुखेथी मांगलिक सांभळवा आतुर होय छे।

राज - केम? तेनाथी शुं थाय?

मम्मी - नवा वर्ष नी शरुआते पूज्य गुरुदेवना मुखे थी मांगलिक सांभळवाथी आखु वर्ष सुखमय, शांतीमय अने समृद्धिमय रहे छे।

राज - एवुं शुं छे मांगलिक मां के जेनाथी आपणने सुख शांती अने समृद्धि मळे।

मम्मी - मांगलिक ना शब्दो नां स्मरणथी लोकमां रहेला सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म नुं शरण अंगीकार कराय। सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म ने एक साथे वंदन कराय छे।

राज - सुदेव, सुगुरु, सुधर्म नो शरण अंगीकार करवो ओटले शुं?

मम्मी - सुदेव, सुगुरु, सुधर्म नो शरण अंगीकार करवाथी आपणा कर्मो नाश पामे छे, पुण्यनो उदय थाय छे, विघ्नो दूर थाय छे। अने दरेक कार्य सरल अने सफल बने छे।

राज - એટલે આપણે જે પણ કાર્ય કરીએ, જ્યાં પણ જઇએ તે દરેક કાર્યોમાં આપણને સફલતા જ મળે?

મમ્મી - હા બેટા! તુ જે ક્ષેત્રમાં જઇશ ત્યાં તને સફલતા મલસે, તુ પ્રિય બનીશ, તને દરેક જગ્યાએ માન, સન્માન અને સફલતા પ્રાપ્ત થશે।

राज - કોઈપણ જીવને, જે તકલીફ માં હોય તેને માંગલિક સંભળાવવાથી તેની તકલીફ દૂર થાય છે।

मम्मी - હા રાજ! માંગલિક મંગલકારી છે, તેને સાંભળવાથી આપણા અશુભ કર્મો નાશ પામે છે અને પૂણ્ય નો ઉદય થાય છે। અને આવતો ભવ એવો મળે છે કે જ્યાં તેને માંગલિક સાંભળવાનો અવસર પણ પ્રાપ્ત થાય છે।

राज - મમ્મી હું માંગલિક રોજે બોલીશ।

मम्मी - જો માંગલિક પુજ્ય ગુરુદેવ, સાધુ ભગવંત કે વડીલો ના મુખેથી સાંભળવા મળે તો વધારે કલ્યાણકારી નીવડે।

राज - પૂજ્ય ગુરુદેવ કે સાધુ સંત ના મુખે થી માંગલિક સાંભળવાથી બે લાભ થશે।

૧) પૂજ્ય સંત સંતીજી ના અને ગુરુદેવ ના દર્શન નો લાભ મળે।

૨) તેમના Positive Vibrations મળે।

राज - ભલે મમ્મી હું આજ થી પ્રયત્ન કરીશ કે સવારે ઉઠીને પૂજ્ય ગુરુદેવ ના દર્શન કરીને એમના મુખેથી માંગલિક સાંભળુ।

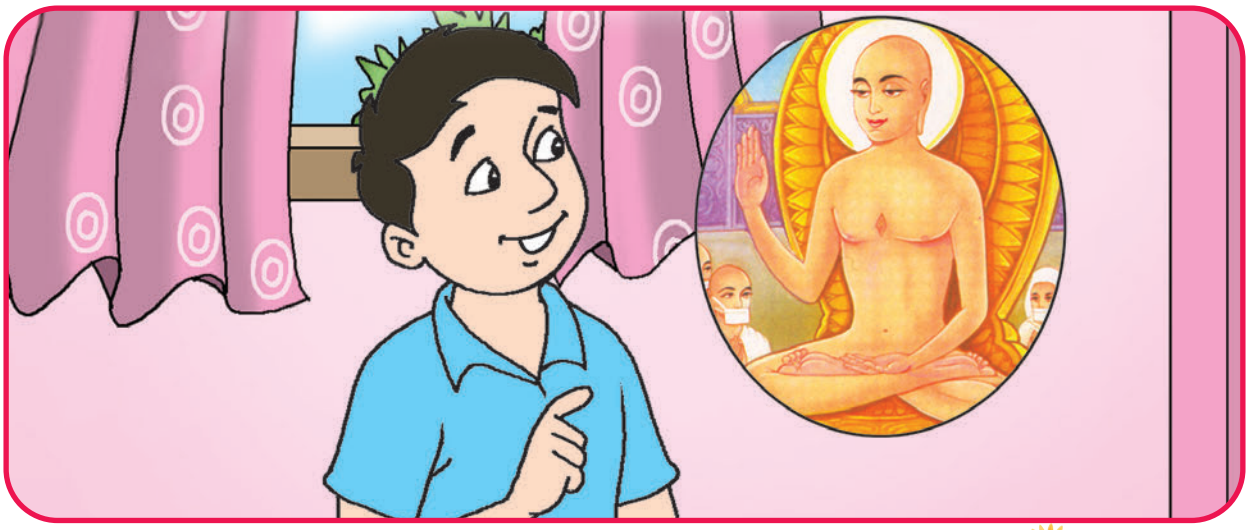

मांगलिक का समय?

मांगलिक कहने या सुनने के लीए कोई भी समय नीर्धारीत नहीं है।
सिर्फ जब मांगलिक सुनते हो तब नीचे की बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

- मांगलिक सुनने समय खडे रहना चाहिए।
- दोनो हाथ भावपूर्वक जोड़कर खड़े रहना चाहिए।
- आस पास खड़े लोगों से बाते नहीं करनी चाहिए।
- ध्यान आजु बाजु नहीं देना चाहिए।
- अपना समस्त ध्यान पूज्य संत सतीजी या गुरुदेव पर केंद्रित करना चाहिए।
- मांगलिक सुनते समय अहोभाव प्रगट करना चाहिए।
- संपूर्ण मौन रहना चाहिए।
- सुदेव, सुगुरु के प्रति अहोभाव प्रगट करना चाहिए।
- हम परमात्मा का शरण स्वीकार कर रहे है वैसे उच्च भाव प्रगट होने चाहिए।
- गुरु मुख से नीकलते एक एक शब्द हमें हमारे कान से अंतर तक उतारने चाहिए। हमें अपना संपूर्ण अस्तित्व चार्ज करना है, ऐसे मंगल भाव और विचारे धारण करने चाहिए।

मांगलिक कब कहना चाहिए?
When is the auspicious Manglik recited?

- On a new beginning.
- जब कोई शुभ कार्य शुरू करना हो तब।

- Before an exam.
- जब कोई परीक्षा देने जाए।

- To welcome the new year.
- जब हम नए साल का स्वागत या साल की शरुआत करे।

- When one travels for any purpose locally or abroad.
- जब शहर के बाहर जाए या विदेश पढ़ने जाए।

- In the new house.
- जब हमें नया घर लेना हो।

- In gratitude for our achieved results.
- जब Result लेने जाए।

- On our birthday.
- अपने जन्मदिन पर।

- When we go for an interview or on the first day of new job.
- Interview देने जाते समय या नौकरी के पहले दिन।

मांगलिक

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवली पन्नत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा,
सिद्धा लोगुत्तमा,साहू लोगुत्तमा,
केवली पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पवज्जामि, अरिहंते शरणं पवज्जामि,
सिद्धे शरणं पवज्जामि, साहू शरणं पवज्जामि,
केवली पन्नतं धम्मं शरणं पवज्जामि।
ए चार शरणा, चार मंगल, चार उत्तम करे जेह,
भव सागरमां न डूबे तेह सकळ कर्मनो आणे अंत,
मोक्ष तणां सुख लहे अनंत,
भाव धरीने जे गुण गाय, ते जीव तरीने मोक्षे जाय,
संसार मांही शरणा चार, अवर शरण नहीं कोय,
जे नरनारी आदरे, अक्षय अविचल पद होय।
अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार,
गुरु गौतम ने समरिए, मनवांछित फळ दातार,
भावे भावना भावीए, भावे दीजे दान,
भावे धर्म आराधीए, भावे केवलज्ञान।

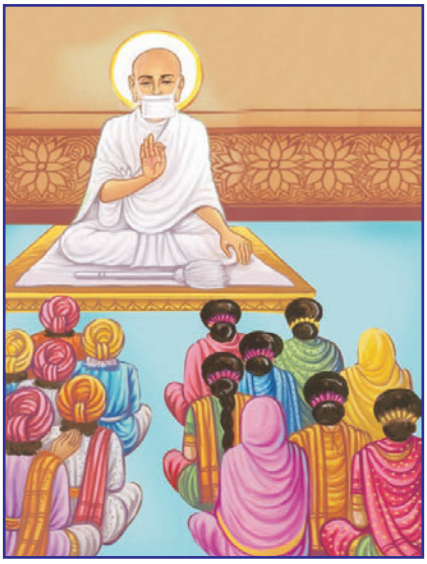

संसारमां चार पदार्थ मंगल छे। अरिहंत देवो, सिध्ध भगवंतो, साधु साध्वीजीओ, केवली प्ररुपित धर्म।
लोकमां चार उत्तम छे। अरिहंत देवो, सिद्ध भगवंतो, साधु साध्वीजीओ, केवली प्ररुपित धर्म।
चारनां शरणां ने अंगीकार करुं छुं। अरिहंत देवोनुं शरणुं, सिध्ध भगवंतोनुं शरणुं,
साधु साध्वीजी नुं शरणुं, केवली प्ररुपित धर्मनुं शरणुं अंगीकार करुं छुं।

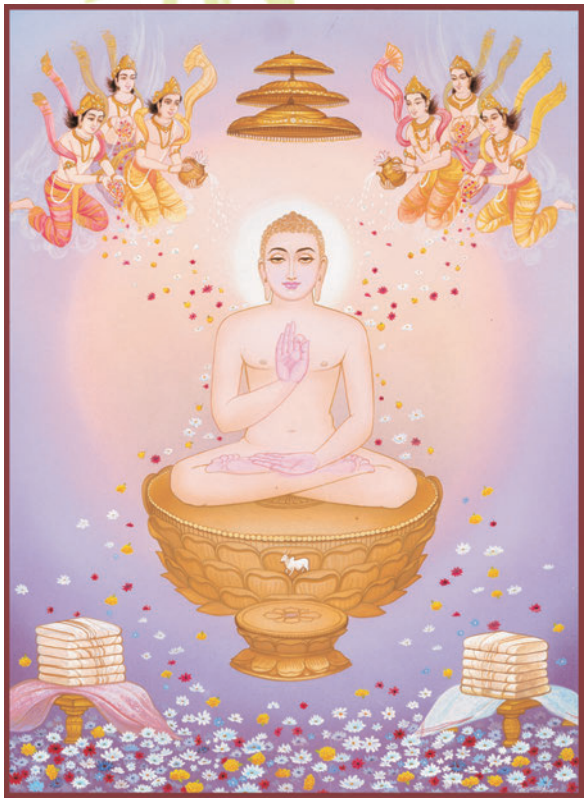

Chattari Mangalam,
Arihanta Mangalam,
Siddha Mangalam, Sahu Mangalam,
Kevali pannatto dhammo Mangalam.
Chattari logutama,
Arihanta logutama,
Siddhaa logutama, Sahu logutama,
Kevali pannatto dhammo logutamo.
Chattari Saranam Pavajjami,
Arihante Saranam Pavajjami,
Siddhe Saranam Pavajjami,
Sahu Saranam Pavajjami,
Kevali pannattam dhammam
Saranam Pavajjami.

E char sarana, char mangal, char uttam kare je bhav sagarama na dube te sakal karma no aane ant moksh tana sukh lae anant, bhaav dhari ne je gun gaay te jeev tari ne moksh a jaay, Sansar mahi sarana char, avar saran nahi koi, je nar-nari aadare, akshay avichal pad hoy. Anguthe amrut vase, labdhi tana bhandar, Guru Gautam ne samariye, manvanchit fal datar, bhaav a bhaavna bhaavi a, bhaav a dije daan, bhaav a dharm aaradhi a, bhaav a Kevalgnan.

In this world there are 4 auspicious things - Arihants, Siddhas, Ascetics and the religion propagated by Kevali. There are 4 excellent things in this world - Arihants, Siddhas, Ascetics and the religion propagated by Kevali. I surrender to 4 things in this world - Arihants, Siddhas, Ascetics and the religion propagated by Kevali.

Meditation

(अपनी आँखे बंद करे, काउस्सग्ग मुद्रा में बैठे)

परमात्मा! मुझे पूरे विश्व में आपके जैसा कोई नहीं लगता है।

परमात्मा, आप मेरे लिए मंगल और उत्तम हो।

मैं अपने आप को शून्य कर रहा हूँ।

मैं अपने दुर्गुण को delete कर रहा हूँ।

हे परमात्मा! मैं आपका शरण स्वीकार करता हूँ।

(Close your eyes, sit straight in Kausagga Mudra)

Oh God! I don't find anyone better than you in any comparison.

Oh God! You are auspicious and supreme for me.

I am becoming zero.

I am deleting all my bad qualities and habits.

Oh God! I am seeking your shelter.

प्रतिज्ञापत्र

सिध्ध क्षेत्र मेरा देश है।

अरिहंत और सिध्ध परमात्मा मेरे देव है।

पंचमहाव्रतधारी साधु मेरे गुरु है।

केवली प्ररुपित जैन धर्म मेरा धर्म है।

हे परमात्मा! इस मनुष्य भवमें मुझे आपका शरण मिला है परंतु मुझे हर एक भव में आपका शरण और चरण मिले ऐसी विनंती कर रहा हुँ। मुझे और कुछ नहीं चाहिए, आपके चरणों में रहूँ ऐसी कृपा बरसाइए!

Success Mantra is Manglik

benefits

- जैसे लेझर किरणें पेटमें पथरी हो तो उस पथरी का चूरा कर देती है... वैसे ही मांगलिक लेझर किरणों जैसा काम करता है, Negativity को तोड़कर positive energy का चक्र बनाता है।
- मांगलिक नीचगोत्र, अंतराय कर्म, मोहनीय कर्म, दर्शनावरणीय कर्म, ज्ञानावरणीय कर्म, अहम् का क्षय करता है।
- Just as a laser beam breaks down the kidney stone intominor particles, Mangalik breaks down our negativity and encircles us with positive energy.
- Mangalik helps us to destroy our, Nich Gotra (lower status of birth), Antaray karma (Obstruction karma), Monhaniya karma (Deluding karma) Darshanavarniya karma (Vision obscuring karma) Gnanavaraniya karma (Knowledge obscuring karma and ego).

परमात्मा के प्रति मेरा प्रेम...

आज से मैं बोलूँगा, तो अपने भगवान जैसा!

- Softly, Politely.
- विनय, विनम्रता के साथ।

आज से मैं सोचूँगा, तो अपने भगवान जैसा!

- Think for all.
- सब के लिए सोचूंगा।

आजसे मैं चलूँगा तो अपने भगवान जैसे!

- Alert while walking.
- संभालकर कदम रखूंगा और जीवदया का पालन करुँगा।

आज से बैठूँगा तो अपने भगवान के जैसे!

- Less sleeping.
- कम निंद करुँगा।

Do you invite a thief into your house?

Then why would you allow thoughts that steal your joy to make themselves at home in your mind!

My parmatma says, "Be stable in all circumstances!"

One right decision leads to

Right path...

One peaceful mind takes

Right decision...

One who listen Manglik

becomes Peaceful...

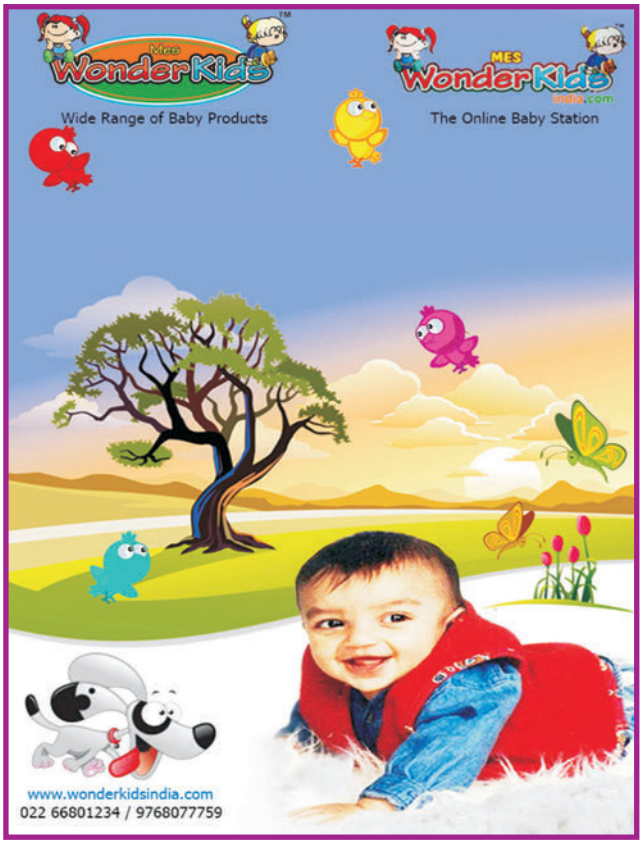

Ayushmaan Bhava

A Blessing For A Lifetime Of Good Health Is Born With Your Baby

Preserve Your Baby's Umbilical Cord Stem Cells At Birth

Now At Just ₹9990*

LifeCell™

Call 1800 419 5555 | SMS 'LIFECELL' TO 53456 | www.lifecell.in

*Terms & Conditions Apply

STORY TIME

अपने नीचे भवनपति देवलोक है। भवनपती देवलोक के राजा चमरेन्द्र देव है। वे बहुत शक्तिशाली है। वे जो एक बार ताली बजाए तो पुरे भारत की इमारते है वो गिर कर नाश हो जाए।

Kids do you know, वे एक बार फूँक मारे तो समुद्र के पानी में सुनामी आ जाए, और पूरा भारत पानी में बहने लगे।

भावार्थः हमें अपने Talent का गलत इस्तमाल (misuse) नहीं करना चाहिए।

Below Bharat kshetra where we stay, there is Bhavanpati Devlok. Bhavanpati Devlok has a king called Chamrendra Dev. If he only claps once, all the buildings of India can demolish. If he blows air only once, there will be Tsunami in all of India. If he opens his eyes, then he can harass Devtas of Devlok.

Moral: We should never misuse our talent.

यदि भवनपती देव को ऊपर देवलोक में जाना हो तो उनको कुछ नियमों का पालन करना चाहिए। उन्हें तीर्थंकर या साधु के पास आकर उनका शरण स्वीकार करना चाहिए तो ही वे उपर देवलोक में जा सकते है।

एक समय की बात है जब परमात्मा महावीर स्वामी बिराजमान थे। चमरेन्द्र को उपर देवलोक में जाने की ईच्छा हुई। नियम अनुसार वे तुरंत ही महावीर स्वामी का

शरण लेने जाते है और उनको वंदन करते है और कहते है, "हे भगवान! मैं आपका शरण स्वीकार करता हूँ" यह बोलकर वे उडकर प्रथम देवलोक में जाते है।

भावार्थः हमें कुछ करने या बोलने से पहले बार बार सोचना चाहिए। हम जब परमात्मा का यानि धर्म का स्वीकार करते है तो हमारे आस पास सुरक्षा कवच बन जाता है।

If Bhavanpati Dev wants to go to upper Devlok, he has to follow certain rules. They have to seek the shelter of Tirthankars, or Guru. Then only they can go to upper Devlok. Once while listening to Parmatma Mahavir's discourse, Chamrendra bowed down to Parmatma and said, " I desire to seek your shelter" and he flew to the first Devlok.

Moral: Think twice before you speak and act and once you realise your mistake, do confess. Religion is the only refuge. A safety energy wheel is created around them. This safety wheel takes care of your body and soul.

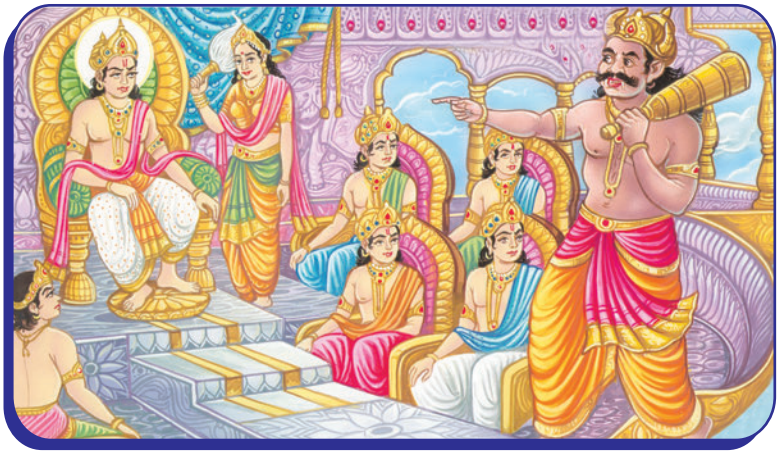

प्रथम देवलाक में जाकर वहाँ धमाल मचाते है, सब तोडफोड करने लगते है, improper (बूरी भाषामें) बात करने लगते है। सभी देव चिंतीत हो जाते है। वहाँ उपस्थित ईन्द्र शक्तिशाली थे उनके पास व्रज (weapon) था। वे जिस पर भी वह व्रज फेंकते और जिसे भी वह व्रज स्पर्श होता है, वह व्यक्ति जलके भस्म हो जाता और वह व्रज जिस पर भी फेंका जाता, उस पर यह व्रज स्पर्श होए बिना वापस नहीं आता।

जब चमरेन्द्र पर व्रज फेंका गया तब वह घबरा जाते है और तेजीसे दौड़ने (full

speed) का प्रयास करते है। वह सोचते है, "मैंने जिसका शरण अंगीकार किया है, वहाँ में पहोंच जाऊँ तो! मुजे अब परमात्मा महावीर के अलावा कोई शरण नहिं देगा। मैं तुरंत नहिं पहुँचा तो वह वज्र मुजे नष्ट कर देगा। ऐसा सोचकर वह पृथ्वी पर जहाँ प्रभु महावीर बिराजमान है वहाँ आते है। खुद का छोटा रुप बनाकर प्रभु के दो पैंरो के बीच कीडा बन बैठ जाते है।"

भावार्थः परमात्मा को केवल संकट के समय ही नहिं सुख के समय में भी याद करना चाहिए।

Once he went to first Devlok, Chamrendra started destroying everything. He started conversing with everybody in bad language. All the celestial beings were worried. One celestial being had a diamond weapon called Vajra and whoever touched that weapon he could get burnt within no time. When Devta attacks with that weapon, it does not come back unless it touches and harms that person. When the Vajra was thrown at Chamrendra, he got so scared that he fled in jet speed to seek refuge. He went to Parmatma, reduced his body size and sat at the lotus feet of the Parmatma.

Moral: Aren't we so similar? Don't we also run to God only when we are in trouble?

तब ईन्द्र को realize होता है कि, "चमरेन्द्र देव, देवलोक आए थे तो वह कोई तीर्थंकर या साधु का शरण लेकर ही उपर आए होंगे और जो उन्होंने कोई तीर्थंकर का शरण स्वीकार किया है, धर्म का शरण स्वीकार किया है तो उन पर वज्र से वार नहीं करना चाहिए" इसलिए वे full speed में नीचे आकर अपने व्रज को पकड लेते हैं। परमात्मा महावीर के पास आकर माफी मांगते है।

"प्रभु आपके शरण में आए हुए व्यक्ति पर मैंने व्रज फेंका, मुझे माफ किजीए, माफी दिजीए, क्षमा किजीए।"

भावार्थः परमात्मा की शरण में जो रहते है, जो उनकी शरण में आते है, उसे कोई problems नहिं आते। एक सुरक्षा कवच बना रहता है। यह सुरक्षा कवच अपने शरीर एवं आत्मा की care करता है। परमात्मा साधु भगवंतो और केवली प्ररुपीत धर्म के शरण में जाना वह है मांगलिक...

The devta, who had thrown Vajra realised that Chamrendra has sought refuge of Parmatma, so he immediately came to earth and bowed down to Parmatma and asked for forgiveness. The Devta confessed, "Oh God! I threw Vajra at the person, who came to your shelter. Please forgive me."

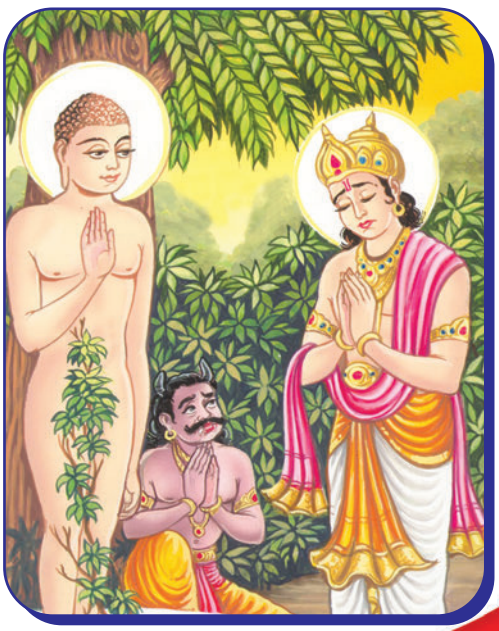

Moral: Think twice before you speak and act when you realize your mistake, do confession. Those who seek the shelter of Parmatma, are always protected.

Trace and Learn

Let's learn Manglik in a new way...

चत्तारि मंगलं,

अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,

साहू मंगलं, केवली पन्नत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा,

सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,

केवली पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि शरणं पवज्जामि,

अरिहंते शरणं पवज्जामि,

सिद्धे शरणं पवज्जामि,

साहू शरणं पवज्जामि,

केवली पन्नत्तं धम्मं शरणं पवज्जामि।

Chattari Sharanam Pavajjami

This four sharans are dharma itself...

They are auspicious and pious!

Arihante Sharnam Pavajjami

Kevali Pannatam Dhammam Sharnam Pavajjami

Siddhe Sharnam Pavajjami

Sahu Sharnam Pavajjami

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol. : 7, Issue : 10, Date : 25.06.2016, Postal Registration No. MNE/171/2015-17.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

Inspiration

Rashtrasant Pujya Gurudev Shree Namramuni Maharaj Saheb

Feedback Form...

It's time to give your views and suggestions!

Look N Learn Children's Jain Magazine

Dear kids, our editors want to hear from you!

Tell us what's on your mind...

How you want your Look n Learn Magazine to be?

Your likes, changes and your desires etc...

We truly value our association with you and would request you to give your feedback about your favourite Look n Learn Magazine to us.

Your response will help us to improve and provide better magazines!

Your Name :

Your Email id :

Your Message:

Please mail us your messages on looknlearn.magazine@gmail.com

Creative inputs and valuable suggestions will be awarded!

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth